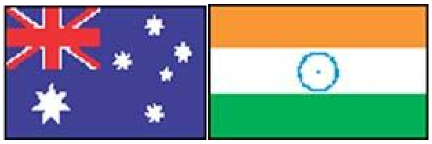

औज़ीभारतीय
THE OZINDIAN

No. 6: December 2006
Editor: Prem Mathur
Please send your contributions to
gemmathur@hotmail.com

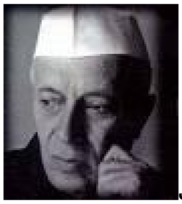
Jawaharlal Nehru

November 14 came and passed; most people in Australia did not notice. Yes, the SBS Hindi programme mentioned the Children's Day. But the rich NRIs and the richer Indians did not remember Nehru, the architect of modern India, the visionary who laid the foundations of scientific research, including atomic research and technology.
The political opponents like to remind us of his failure in relation to China, the Maoist country that betrayed the trust, broke the Panchsheel agreement, and even today continues to show its muscles on the North-East borders.
The so not acknowledge that his non-aligned foreign policy, that displeased the western Power - the USA, has withstood the test of time. India remains boldly independent in its defence and foreign policy.
They like to blame him, only him, for the partition of India – out of ignorance. They forget that even Gandhiji was so disillusioned that he acquiesced after initial resistance.
Readers who have not yet read Nehru's **Autobiography** and **The Discovery of India,** please read these books to understand his vision and to know him as a compassionate man that he was.

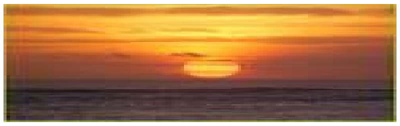

__2006 की आखिरी शाम__

छै के साल का सूरज ढलता है
ढल जाने दो
रात को भी आ जाने दो
दो जाम पर जाम
गम का सागर गहरा है
छलक जाने दो इसको
मातम कैसा
इस काले साल का भैया
जाता है
साले को जाने दो
नाचो गाओ जश्न मनाओ।

नाचो गाओ जश्न मनाओ
नए साल का उगने दो सूरज
आने दो नव आशा की किरणें
फिर धर्म के नाम से युद्ध कोई
न होने पाए
फिर डिक्टेटर कोई जनता को
लूट न पाए
फिर कोई जनतन्त्र के नाम पर
किसी को परतन्त्र बना ना पाए
नए साल का उगने दो सूरज
आने दो नव आशा की किरणें ।

Nehruji's favourite verses from
'Stopping by Woods on a Snowy Evening'
by Robert Frost.

The woods are lovely, dark and deep,
But I have promises to keep,
And miles to go before I sleep,
And miles to go before I sleep.

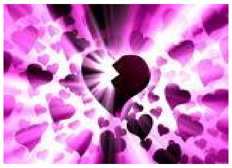

No, it's not <u>your</u> fault, friend

Bit by bit by bit the heart breaks
Keeps getting broken breaking
Does not get shattered for good.

No it's not your fault friend,
It's my heart that get's broken
Keeps getting broken;
Does not get broken for good.

No it's not your fault.
It my heart that get's broken
and the bits
get scattered:
a piece there under your feet,
a piece in the ring there,
on that finger.
Many grains fly in the wind
getting into those eyes,
causing tears.

No, not your fault friend.
It's this heart that did not learn
the ways of the world –
it did not learn the lingo
of the commerce of relationships;
the fool, it thought people understood
the idiom of the eyes;
did not know, the fool, that
there are layers upon layers
of screens between the heart
and the eyes.
No, It's not your fault;
It's the heart that just gets broken, and
keeps getting broken,
But does not get broken for good!
No, it's not <u>your</u> fault, friend.

Transcreated from Hindi
Prem Mathur Dec2006

HAIKU

1.
The rainbow across
The Swan teases me to work
For the pot of gold.

2.
Which golden ray, when
At what slant, may lives illumine
Who knows; love happens.

3.
Layers numerous
Curtains on curtains. Words, words.
Obscure the feelings.

4.
Leaves bronze brown and pale
On every branch, on the ground
Life colours my love.

5.
Showers, clouds, sunshine
Changing face of the city,
Facades of your love.

6.
They sigh and whisper
They shout out aloud, publish
Sad and mad poets are.

7.
(John Howard once said Kim Beazley did not have the ticker.)
Ga ga we go o'er
Tickery, tickery John
Got a heart has he?

© Prem Mathur 2006

पर्दे में रहने दो

आजकल बडी चर्चा है दुनिया भर में बुर्के की। कहीं कहते हैं कि बात करो तो चेहरा तो दिखाओ। कहीं हिजाब पर भी रोक लगा दी है।योरप अमरीका वाले खौफ में हैं कि कौनसे बुर्के के पीछे टेररिस्ट छुपा हो क्या पता।हमारे ओजी भाई भी घबराए हैं पर कैसे लगाएँ रोक इस बहुसॉस्कृतिक देश में।कैनेडा का अनुसरण करें वो कहने लगे हैं बहुत हो गया अब। बात यहाँ तक पहुँची गई है कि एक देश एक सँस्कृति वर्ना जाओ अपने घर यानि वहाँ जहाँ से आए थे।और मुस्लिम धर्म के बचाने चलाने फैलाने वालेउत्तेज्जित हैं कहते हैं कि हमारे इस्लाम पर वार है येः "इस्लाम खतरे में है"। नारा उठ रहा है पाकिस्तान में भी क्योंकि बलात्कार (rape) कानून बदल दिया गया है और अब चार गवाहों कि जरूरत नहीं।

अब सवाल ये होता है कि कौनसा इस्लाम खतरे मैं है। वो जो एशिया के कारोडों लोग मानते जानते हैं या वो जो कुछ अरबी या इनकी पुरानी रूढियों की नई पीढियाँ मानती हैं। क्या किसी ने देखा है हमारे यहाँ गावों में किसान् या लुहार या किसी भी श्रमजीवी महिला (working class woman) को बुर्का पहन कर काम करते हुए? ये या तो मिडल क्लास वालों की बातें हैं या 'असली नसल' के कहलाने वाले लोगों की।
याद है मुझको 'मेरे महबूब' की वो शायराना घडी जब बुर्के से आँखों की एक झलक से आँख लडी और शायर साहब हो गए फिदा। और 'पाकीजा' की वो पाक मुहब्बत कि 'आपके पाँव देखे' और हो गई मुहब्बत। वैसे ये अनुभव की बात है कि आशिक सिर्फ आँखें या पैर देख कर जान लेते है कि कितनी खूबसूरत है महबूबा। जरूर एक रहा होगा चश्मेवाला और दूसरा जूतेवाला ! साथ ही शायर होना जरूरी है। तभी तो गा सकता है आशिक कि 'चौधवीं का चाँद हो' और 'तेरे आगे चाँद पुराना लगता है'। क्या खुशफहमी है! खुशकिस्मत हैं वो जो इसी खुशफहमी (pleasant illusion) में मर जाते हैं।
इसीलिये कहा है एक समझदार शायर नेः 'पर्दे में रहने दो पर्दा जो उठ गया तो भेद खुल जाएगा'।
प्रेम माथुर 1/12/2006

खुशबू आ नहीं सकती...

गुलशनों की हमें अब कोई जरूरत नहीं है
खुशबुएँ हैं नायाब फूलों की हर तरफ
रंगीन खूबसूरत शीशियों में बिकती हैं नकली
इन फूलों की हमें अब कोई जरूरत नहीं है।

जग देखी

दुनिया तुमने देखी होगी
 लोग यहाँ ऐसे भी हैं वैसे भी
समझने वाले जानते हैं पर
 कुछ हैं नादाँ हम जैसे भी

देखी होगी डूबती नैया तुमने
 तूफानों में मँझधारों में
मैंने देखी हैं लेकिन डूबते हुए
 साहिल से टकराते भी

रोना किसका रोते क्यूँकर
 दुनिया का या किस्मत का
प्यार क्यूँ सबसे करते हो
 जो खफा हुए घरवाले भी

हमसफर

खत्म होने को है सफर
 अब जरा सा प्यार तो दे दो
सौगात ना दी उम्र भर न सही
 अब खैरात ही दे दो

प्रेम माथुर 1/12/2006

Your articles/poems are invited.

Please mail to:
gemmathur@hotmail.com

by 20 December 06 please.